P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-4* ISSUE-5*January-2017
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

बुद्धचरितम् महाकाव्य में वर्णित ललित कलाएं

संदीप कुमार मिश्र
प्रवक्ता,
संस्कृत विभाग,
दयानन्द बछरावां पी0जी0 कालेज,
बछरावां, रायबरेली,
उ0प्र0

सारांश

मानव सौन्दर्य प्रेमी होता है। वह अपनी रागात्मक प्रवृत्ति के कारण पहले अनेक प्रकार की कलाओं की सृष्टि करता है तदुपरान्त उन्हीं कलाओं के व्याज से सौन्दर्यानुभूति करता है। प्रत्येक ललित कलाओं की उत्पतिएवं विकास के मूल में यही रहस्य है। यह अनिवार्य नहीं कि प्रत्येक सुन्दर वस्तु उपयोगी हो। किसी वस्तु में उपयोगिता सुन्दरता दोनों होती है किसी में एक गुण रहता है एक का अभाव रहता है। लेकिन संसार की सभी वस्तुएं उपयोगी हैं भले ही हम अपने सीमित ज्ञान के कारण उनकी उपयोगिता को न समझ सकें।[1] परमनीषियों ने उपयोगी और ललित भेद से कलाओं को दो भागों में विभक्त किया है।

मुख्य शब्द : वर्णित ललित कलाओं में कला, संगीत, नगर, द्वार दुर्ग भवन आदि।

प्रस्तावना

ललित कलाओं में भी वास्तुकला, मूर्तिकला एवं चित्रकला चक्षुइन्द्रिय द्वारा मानव मन को तृप्त करती है जबकि काव्य कला और संगीत कला श्रवणेन्द्रिय द्वारा आनन्द प्रदान करती है। इस प्रकार ललित कलाओं का विशिष्ट स्थान है।

काव्यकला

बुद्धचरितम् महाकाव्य में प्राप्त वर्णनों के आधार पर यह स्पष्ट हो जाता है कि उस युग में काव्य कला का विकास उत्तम कोटि का था महाकवि अश्वघोष का बुद्धचरितम महाकाव्य अपनी सरसता गम्भीरता उद्वेलित करता हुआ सम्पूर्ण समाज में महात्मा बुद्ध के स्वचरित से शिक्षा प्रदान करता है।

इसलिए शायद महाकवि अश्वघोष ने इस काव्य की रचना की जो मुनि श्रेष्ठ महात्मा बुद्ध के प्रति सम्मान भाव से काव्य कौशल का प्रदर्शन करते हुए ग्रन्थ के अन्त में लिखा भी है–

भवेत् स्थिरा बुद्ध पदारविन्द–
श्रद्धा जनानामिति सम्प्रधार्य।
शुभभङ्करं काव्यमिदं निबद्धतम्
प्रदर्शितं नैव विशिष्टकौशलम्।।[2]

इस प्रकार महाकवि अश्वघोष ने ग्रन्थ की रचना करके सम्पूर्ण भू मण्डल में यश प्राप्त करने वाले हो गये। बुद्धचरितम् महाकाव्य में सम्पूर्ण भारतीय संस्कृति को स्पष्ट किया है यह काव्य कहीं तो करुण रस से परिपूर्ण तो कहीं वीर रस से ओतप्रोत हुआ श्रंगारिक पक्ष को भी अपने आप में निहित करता हुआ प्राकृतिक परिदृश्यों को भी सम्मिलित किया है।

इस प्रकार बुद्धचरितम् महाकाव्य में गौतमबुद्ध के जन्म से लेकर उनके महापरिनिर्वाण तक का समस्त जीवन वृत्त काव्यमय ढंग से प्रस्तुत किया है। महाकवि अश्वघोष सम्राट कनिष्क की राजसभा के कवि थे, अतः उनको राजदरबार राजनीति समाज नीति का पूर्ण ज्ञान था इसी कारण तत्कालिक भारतीय धार्मिक सामाजिक राजनैतिक एवं सांस्कृतिक तथा ललित कलाओं का वर्णन, स्थिति परिस्थितियों का वर्णन यथा प्रसङ्ग मिलता है।

संगीत कला

श्रवण मात्र से ही आनन्द सागर में भावविभोर कर देने वाली यदि कोई कला है तो वह है संगीत। संगीत से आनन्द का आविर्भाव होता है और आनन्द तो परमात्मा का ही स्वरूप है। महर्षि याज्ञवल्क्य संगीत के माध्यम से ही मोक्ष की सिद्धि स्वीकार करते हैं।

गीत, वाद्य तथा नृत्य का समावेश संगीत के अन्तर्गत आता है। बुद्धचरितम् महाकव्य के अनुशीलन से यह स्पष्ट होता है कि तत्कालीन कला में संगीत कला का पूर्ण विकास था।[3]

महाकवि ने राजकुमार के ऐश्वर्य–भोग में मनोहर नृत्य गीत एवं वाद्य का वर्णन करते हुए वर्णित किया–

ततः शरत्तोयदपाण्डुरेषु भूमौ विमाननेष्विव रञ्जितेषु।
हर्म्येषु सर्वर्तुसुखाश्रयेषु स्त्रीणामुदारैर्विजहार तूर्यैः।[4]

राजकुमार को कामोन्मत्त युवतियां अपने वश में करने के लिए अभिनय के साथ मधुर गीत गार्या और नृत्य एवं वाद्य से मन बहलाया–

तत उत्तममुत्तमाङ्गनास्तं निशि तर्यैरूपतस्थुरिन्द्रकल्पम्।
हिमवच्छिरसीव चन्द्रगौरे द्रविणेन्द्रात्मजमप्सरोगणौघाः।।[5]

पक्षियों के मनोहर गीतमय कलरव ध्वनि का वर्णन–

ततः कदाचिन्मृदुशाद्वलानि पुस्कोकिलोन्नादितपादपानि।
शुश्राव पद्याकरमण्डितानि गीतैनिबद्धानि स काननानि।।[6]

तत्कालीन राजाओं के यहाँ राजकुमार को नृत्यगीत एवं वाद्यक ध्वनियों से जगाया जाता था।

महाकवि अश्वघोष ने धर्म संगीत का वर्णन करते हुए वर्णित किया है कि राजाओं ने बुद्ध धातुओं वाले स्तूपों की स्त्रोत्रगान उत्कृष्ट सुगन्धि द्रव्य सुगन्धि मालाओं तथा सुमधुर गीत ध्वनि से उत्तम उपासना की।[7]

नृत्य कला

महाकवि अश्वघोष ने बुद्धचरितम् महाकाव्य में नृत्य कला का वर्णन करते हुए वर्णित किया है कि उस समय राजपरिवार में राजा तथा राजकुमार नृत्यगीत आदि मनोरंजन ध्वनियों के साथ प्रातःकाल जागते थे।[8]

राजभवन में अन्तपुरः होता है जहाँ पर नृत्य आदि कार्यक्रम संचालित हुआ करते हैं–

यदा च शब्दादिभिरिन्द्रियार्थैरन्तःपुरे नैव सुतोऽस्य रेमे।
ततो बहिर्व्यादिशति स्म यात्रां रसान्तरं स्यादिति मन्यमानः।।[9]

राजकुमार ने उत्तम प्रमदाओं के द्वारा नृत्याभिनय किया है। राजकुमार ऐश्वर्य भोग तरुणी स्त्रियों के साथ मनोहर नृत्य गीत एवं वाद्य के सहारे मनोरंजन करते थे।[10]

वाद्यकला

महाकवि अश्वघोष ने बुद्धचरितम् महाकाव्य में वाद्य आदि यन्त्रों का वर्णन किया है। जो तत्कालीन प्रयोग में लाये जाते थे–

वीणा

उस समय सुवर्ण पत्रों से मण्डित वीणा होती थी–

दयितामपि रूक्मपत्रचित्रां कुपितवोऽ्कगतां विहाय वीणाम्।[11]

महाकवि अश्वघोष ने सात तारों वाली वीणा का वर्णन किया है।[12]

ढोल

महाकवि अश्वघोष ने ढोल तथा डोर का वर्णन करते हुए वर्णित किया है कि–

पणवं युवतिर्भुजांसदेशादवविस्त्रंसितचारूपाशमन्या।
सविलासरतान्ततान्तमूर्वोर्विवरे कान्तमिवाभिनीय शिश्ये।[13]

बांसुरी

तत्कालीन बाँसुरी का भी प्रयोग होता था बुद्धचरितम् महाकाव्य में बांसुरी का वर्णन करते हुए वर्णित किया हे कि प्रासाद में सोई हुई स्त्रियाँ हाथ में बांसुरी लिए हुए थी।[14]

मृदंग

महाकवि ने मृदंग का वर्णन करते हुए वर्णित किया है कि तत्कालीन स्त्रियाँ मदृंग को प्रियतम् की भाँति आलिंगनबद्ध कर सो रही थी। बुद्धचरितम् महाकाव्य में ललित कलाओं का अनुशीलन करते हुए देश काल आदि का वर्णन प्राप्त होता है। अनरण्य राजा के समान शाक्य राजा शुद्धोदन का राज्य विदेशी शासन से मुक्त था। उस समय वहाँ पर चोर एवं शत्रु का किंचित मात्र भी भय नहीं था उस राज्य में सभी आनन्द एवं सुखमय जीवन व्यतीत करते थे।[15]

दश प्रहद् राष्ट्रों के निर्माता एवं स्वामी का वर्णन विवस्वान पुत्र प्रजापति मनु के रूप में किया कि समुद्र पर्यन्त पृथ्वी को जीतकर लोभी पुरुष उससे आगे समुद्र पार वाले देशों को भी जीतना चाहता है। देश पर धर्म का महान अनुग्रह होता है। देश की रक्षा ज्ञान के महाभागों द्वारा पालित होती है। तत्कालीन राजाओं से सुरक्षित देश में लोग निवास करते थे।[16]

नगर

बुद्धचरितम् महाकाव्य में ललित कलाओं का अनुशीलन करते हुए कपिलवस्तु नगर का वर्णन किया है। वह नगर समस्त जनपदों में उसी प्रकार हर्षमग्न हो गया जैसे नलकूबर के जन्म से अप्सराओं से युक्त कुबेर नगर प्रमुदित हो गया–

इति नरपतिपुत्र जन्मवृद्धया सजनपदं कपिलाह्वयं पुरं तत्।
धनदपुरमिवारसरोऽवकीर्णं मुदितमभन्नलकूबरप्रसूतौ।।[17]

उस कपिलवस्तु नगर के समीप हरे भरे वन और उद्यान थे, जिससे वह नगरोधान हो गया, राजगृह नगर का वर्णन, नगर पाँच विख्यात पर्वतों से चिन्हित था, धन्या नामक नगरी का वर्णन, श्रावस्ती नगर का वर्णन, सङ्काश्य नगर का वर्णन, अङ्ग नगर, आपण नगर, विदेह नगर, सुहम्देश, वैशाली नगर, अलकावती नगरी गया, शूर्पारक नगर, मथुरा, स्थूलकोष्ठ नगर, साकेत नगर, भर्गप्रदेश, कौशाम्बी, गन्धार देश, पापापुर नगर, कुशीनगर आदि नगरों का वर्णन बुद्धचरितम् महाकाव्य में वर्णित है।[18]

नगर द्वार

बुद्धचरितम् महाकाव्य के ललित कलाओं के अनुशीलन से यह स्पष्ट होता है कि जिस समय राजकुमार की अभिनिष्क्रमण की दृढ़ इच्छा हुई उस समय देवताओं ने तत्काल राजप्रसाद के द्वार खोल दिये। उस समय नगर के द्वार के फाटक इतने मजबूत थे कि विशाल हाथियों द्वारा सुविधापूर्वक नहीं खोले जा सकते थे–

गुरुपरिघकपाटसंवृता या न सुखमपि द्विरदैरपाव्रियन्ते।
व्रजति नृपसुते गतस्वनास्ताः स्वयमभवन्विवृताः पुरः प्रतोल्यः।।[19]

बुद्धचरितम् महाकाव्य में वर्णन किया कि भगवान तथागत जिस द्वार से निकले उसे गौतमद्वार नाम से सम्बोधित किया नागद्वार का वर्णन जिस समय अन्य देशों के राजा कुशीनगर पर आक्रमण किया उस समय भयभीत स्त्रियों ने अपने प्रधान द्वार बन्द कर दिये।[20]

दुर्ग किला

महाकवि अश्वघोष के समय में दुर्ग एवं किला आदि का निर्माण होता था, वह दुर्ग अथवा किला उस

राष्ट्र अथवा नगर के केन्द्र बिन्दु होते थे। उस समय मगधराज के महामंत्री वर्षकार ने लिच्छवियों का दमन करने के लिए एक किला बनवाया और समस्त देश के राजाओं ने अपने देश के मुख्य नगर में धातुओं की सुरक्षा के लिए विधिवत् स्तूप निर्माण कराया। तथा द्रोण ब्राह्मण के भाग का नवम् स्तूप एवं भस्ममाला नामक दशम स्तूप हुआ।[21]

स्तूप कैलाश की चोटियों के समान दिखाई देते थे–

राजानः सह सामन्तैर्भूसुराः सह बान्धवैः।
जनाश्च केतुभी रम्याञ्छुभ्रान स्तूपानपूजयन्।।[22]

मौर्य सम्राट ने धातुओं को सात स्तूपों से निकालकर एक ही दिन में अस्सी हजार भव्य स्तूपों के बीच विभाजित कर दिया जो शरद्ऋतु के उज्ज्वल मेघों के समान चमक उठे।[23]

भवन

बुद्धचरितम् महाकाव्य में विशाल राममहल प्रासादों के वर्णन से तत्कालीन वास्तुकला की उन्नति का परिचय प्राप्त होता है अनेक खण्डों के अत्युच्च महलों का उल्लेख बुद्धचरितम् महाकाव्य में हुआ है। राजकुमार कामकला में प्रवीण रति क्रीड़ा में सुदृढ़ नारियों द्वारा पकड़े रहने पर प्रासाद से नीचे आना भूल गया। महल की ऊपरी तल पर स्थित प्रकोष्ठ प्रासादों में सुवर्ण दीप प्रज्वलित हुआ करते थे और जिसका आन्तरिक भाग कृष्णगुरु की गन्ध से सुवासित था और प्रासाद में हीर खण्ड जड़ित सुवर्ण सिंहासन हुआ करते थे।[24]

उस समय वास्तुकला के अनुसार भवन में खिड़कियाँ हुआ करती थीं और वहाँ पर खिड़की का सहारा लेकर स्त्रियाँ खड़ी होती थीं। कुमार को देखने की इच्छा से नगर की महिलाएं महलों की खिड़कियों के पास आ गयीं खिड़कियों से देखने वाली स्त्रियों के मुखकमल शोभित हो रहे थे। उस समय प्रासाद की खिड़कियाँ विशाल नहीं होती थी।[25]

महाकवि ने भवन में आंगन का वर्णन किया है कि–

अथ सोऽवततार हर्म्यपृष्ठा द्युवतीस्ताः प्रथमा विनिर्जगाम।[26]

महाकवि ने भवन में सीढ़ियों का वर्णन किया है। भवन में अन्तःपुर का वर्णन अन्तःपुर भवन की आंठवी मंजिल में होता है जिसे रनिवास कहते हैं।[27]

उद्देश्य

काव्य अथवा साहित्य वह अनुकरणात्मक कला है जिसका लक्ष्य आनन्द प्रदान करना है महाकवि अष्वघोश द्वारा विरचित बुद्धचरितम महाकाव्य जहां अपनी विशालता, प्राचीनता के लिए सुप्रसिद्ध हैं वहीं उसकी आधुनिक युग में प्रासांगिक उपादेयता भी सर्वजनीन हैं। मानव जीवन के दुःखो का आत्यान्तिक निवारण इस महाकाव्य से सम्भव है। महाकाव्य में वर्णित ललित कलाओं से हमारे मनोभावों का परिष्कार होता है एवं मानव जीवन को सुगमता, सहजता एवं आनन्द प्रदान करना ही इस शोध पत्र का उद्देश्य हैं।

निष्कर्ष

प्राचीन ग्रन्थों, काव्यों, महाकाव्यों के अनुशीलन से सामाजिक आर्थिक राजनैतिक एवं सांस्कृतिक क्रिया कलापों का आधुनिक युग में समावेष किया जाय तो व्यक्ति के मनोविकारों ह्रास हो रही संस्कृतियों, पतन हो रही नैतिकताओं का निवारण करना संभव हो सकता है। इस शोध प्रबन्ध से इन्ही सांस्कृतिक मूल्यों का संरक्षण करना है जिससे आधुनिक युग में हमारी सांस्कृतिक और ललित कलायें जीवित रह सकें।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *बुद्धचरितम् 14/77*
2. *बुद्धचरितम् 28/74*
3. *याज्ञवल्क्य स्मृति पति धर्म प्रकरण, 115*
4. *बुद्धचरितम् 2/29*
5. *बुद्धचरितम् 5/45*
6. *बुद्धचरितम् 3/1*
7. *बुद्धचरितम् 28/58, 28/59*
8. *बुद्धचरितम् 8/58*
9. *बुद्धचरितम् 3/51*
10. *बुद्धचरितम् 3/29*
11. *बुद्धचरितम् 5/48*
12. *बुद्धचरितम् 5/55*
13. *बुद्धचरितम् 5/56*
14. *बुद्धचरितम् 5/49*
15. *बुद्धचरितम् 2/15*
16. *बुद्धचरितम् 23/14*
17. *बुद्धचरितम् 1/89, 5/22, 5/23, 5/83, 6/65, 6/67*
18. *बुद्धचरितम् 25/52*
19. *बुद्धचरितम् 5/82*
20. *बुद्धचरितम् 28/6*
21. *बुद्धचरितम् 28/56*
22. *बुद्धचरितम् 28/57*
23. *बुद्धचरितम् 28/65*
24. *बुद्धचरितम् 5/44*
25. *बुद्धचरितम् 3/21*
26. *बुद्धचरितम् 5/67*
27. *चक्रपणि विजय महाकाव्य 9/47*